

मूक पत्रिका

निष्पक्ष, निर्भीक, स्वतंत्र आवाज...

वर्ष – 03 अंक – 12 बेमेतरा, मंगलवार 25 अगस्त 2026

रायपुर एवं बेमेतरा से प्रकाशित

कुल पेज – 08

मूल्य – 1 रुपये

डाक पंजीयन- दुर्ग/1743290201/2025-27

समाचार सार

देश में चीनी की कोई कमी नहीं, उत्पादन से जुड़ी संस्था का दावा नई दिल्ली। देश में चीनी की बढ़ती कीमतों से परेशान उपभोक्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण खबर सामने आई है। उद्योग जगत की प्रमुख संस्था इंडियन शुगर एंड बायो-एनर्जी मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन (आईएसएमए/इस्मा) ने साफ किया है कि भारत में चीनी की कोई कमी नहीं है। आईएसएमए को उम्मीद है कि आने वाले दिनों में खुदरा चीनी की कीमतों में गिरावट आएगी, जिससे उपभोक्ताओं को राहत मिलेगी।

मॉस्को में पुतिन से मिले जयशंकर

मॉस्को। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सोमवार को मॉस्को में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात की। इस दौरान जयशंकर ने व्लादिमीर पुतिन को प्रधानमंत्री नरेंद्र का खास संदेश दिए। जयशंकर ने कहा, मैं प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी की ओर से शुभकामनाएं देकर अपनी बात शुरू करना चाहता हूं। उन्होंने आपको देने के लिए मुझे एक व्यक्तिगत संदेश दिया है, जिसे मैं आपको सौंपना चाहता हूं। उन्होंने कहा, हमने अंतर-सरकारी आयोग की बैठक की। मुझे लगता है कि कुल मिलाकर हमारे पास आपको बताने के लिए एक अच्छी रिपोर्ट है। जयशंकर ने कहा, मुझे लगता है कि हमारा आर्थिक सहयोग, व्यापार, ऊर्जा, उर्वक, परमाणु और अन्य क्षेत्रों में भी काफी प्रगति हुई है। मुझे इन सभी विषयों पर विस्तार से बात करने में खुशी होगी।

नितिन नवीन ने ली नवनियुक्त सोशल मीडिया टीम की बैठक

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने नई दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में नवनियुक्त सोशल मीडिया टीम के पदाधिकारियों की बैठक ली। बैठक के दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नवीन ने संगठन के डिजिटल संचार को और अधिक प्रभावी बनाने, जन-जन तक पार्टी के विचारों और कार्यों को पहुँचाने तथा सोशल मीडिया के माध्यम से जनसंवाद को और अधिक सशक्त करने की दिशा में विस्तार से मार्गदर्शन दिया। इस अवसर पर बैठक में सोशल मीडिया के नवनियुक्त राष्ट्रीय संयोजक दीपक म्हस्के, निवर्तमान राष्ट्रीय संयोजक अमित मालवीय, नवनियुक्त राष्ट्रीय सह-संयोजक श्रीमती प्रीति गांधी, शिवानन्द द्विवेदी, आलोक भट्ट व अरुण यादव सहित सोशल मीडिया विभाग के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

रक्षाबंधन से पहले जारी होगी महतारी वंदन योजना की 31वीं किस्त

बालोद। छत्तीसगढ़ की महिलाओं को रक्षाबंधन त्योहार से पहले मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय बड़ी सीगात देने जा रहे हैं। छरू साय मंगलवार को राज्य के 68 लाख महिलाओं के खातों में महतारी वंदन योजना की 31वीं किस्त जारी करेंगे। दरअसल, सीएम साय मौलवार को बालोद जिले के डोण्डीलोहारा स्थित लाल रघुवीर सिंह स्टेडियम में आयोजित बिहान दीदी एवं स्व सहायता समूह की महिलाओं के सम्मान समारोह में शामिल होंगे। इस दौरान बिहान दीदीयाँ एवं विभिन्न स्व-सहायता समूहों की उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित करेंगे। साथ ही महतारी वंदन योजना की 31वीं किस्त भी जारी करेंगे। इतना ही नहीं इस दौरान सीएम साय कुपोषण मुक्ति अभियान के अंतर्गत कुपोषित बच्चों के माताओं को सुपोषण किट के अलावा 'हर घर मुनगा' अभियान के तहत समारोह में उपस्थित महिलाओं को एक-एक मुनगा पेड़ का भी वितरण करेंगे। जिले में इस आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है।

मुख्यमंत्री ने युवा साहित्यकार करुणा सागर पण्डा के उपन्यास ‘कोहरा’ का किया विमोचन

हर घर में हो छोटी-सी लाइब्रेरी, पढ़ने की संस्कृति को दें बढ़ावा: मुख्यमंत्री साय

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने राजधानी रायपुर के महंत चासीदास संग्रहालय सभागृह में युवा साहित्यकार करुणा सागर पण्डा के उपन्यास ‘कोहरा’ का विमोचन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि साहित्य केवल समाज का दर्पण ही नहीं, बल्कि उसे सजग करने और सही दिशा दिखाने का भी सशक्त माध्यम है। ‘कोहरा’ जैसे उपन्यास सामाजिक विषयों को विमर्श के केंद्र में लाने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने युवा साहित्यकार करुणा सागर पण्डा को उनके उपन्यास के प्रकाशन पर बधाई देते हुए कहा कि संवेदनशील और चुनौतीपूर्ण विषय पर लेखन के लिए साहस की आवश्यकता होती है। रचनाकार जब समाज की समस्याओं और वास्तविकताओं को अपनी लेखनी का विषय बनाते हैं, तो साहित्य सामाजिक चेतना का माध्यम बनता है। मुख्यमंत्री ने छत्तीसगढ़ की समृद्ध साहित्यिक परंपरा का



उल्लेख करते हुए कहा कि प्रदेश की धरती ने देश को अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकार दिए हैं। विनोद कुमार शुक्ल जैसे मूर्धन्य रचनाकार को साहित्य के सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। छत्तीसगढ़ मुक्तिबोध की सृजनभूमि रही है और पदमलाल पन्नालाल बख्शी जैसे साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी के रचनाकार इस गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं और समकालीन विषयों को साहित्य के माध्यम से समाज के सामने ला रहे हैं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि सिनेमा और साहित्य ने समय-समय पर समाज के संवेदनशील विषयों को सामने लाने का काम किया है। उन्होंने ‘द केरल स्टोरी’ और ‘द कश्मीर फाइल्स’ का उल्लेख करते हुए कहा कि कठिन और मार्मिक विषयों को उठाने पर मतभेद और विरोध के बीच भी सामने आते हैं, लेकिन रचनाकार का दायित्व है कि वह अपनी दृष्टि और संवेदना के साथ समाज के सामने विषय रखे। उन्होंने ‘कोहरा’ के लेखक के साहसिक प्रयास की सराहना की। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा

कहा कि अच्छी पुस्तकें अधिक से अधिक पाठकों तक पहुंचनी चाहिए। उन्होंने लोगों से अपने घरों में छोटी-सी लाइब्रेरी बनाने और बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने की अपील की। मुख्यमंत्री ने कहा कि घर की समृद्धि केवल उसकी भव्यता में नहीं, बल्कि वहां उपलब्ध पुस्तकों और अध्ययन की संस्कृति में भी दिखाई देती है। उन्होंने कहा कि पुस्तकें पीढ़ियों के बीच ज्ञान, संस्कार और अनुभव का सेतु बनती हैं। इसलिए हर परिवार को अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकों का संग्रह अवश्य रखना चाहिए।

नक्सलवाद की अनकही पीड़ा को भी सामने लाएं रचनाकार

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस अवसर पर नक्सलवाद का उल्लेख करते हुए साहित्यकारों और रचनाकारों से इससे प्रभावित लोगों की पीड़ा और संघर्ष को भी अपनी रचनाओं का विषय बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ ने लंबे समय तक नक्सल हिंसा का दर्श झेला है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की दृढ़ इच्छाशक्ति, सुरक्षा बलों के अदम्य साहस और राज्य सरकार के सतत प्रयासों से प्रदेश में नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक सफलता मिली है और बस्तर शांति एवं विकास के नए दौर की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि नक्सलवाद की हिंसा में अनेक निर्दोष लोगों ने अपने परिजनों को खोया, बच्चों की शिक्षा और भविष्य प्रभावित हुआ तथा दशकों तक अनेक क्षेत्र विगत की मुख्यधारा से दूर रहे। नक्सलवाद की इस मानवीय त्रासदी और इसके कारण समाज पर पड़े प्रभावी को भी व्यापक रूप से सामने लाने की आवश्यकता है।

तय सीमा से ज्यादा सिम कार्ड रखने वालों पर सख्ती

नई दिल्ली (ए)। सरकार की ओर से मोबाइल सिम कार्ड को लेकर नई सख्त नीति से लागू हो गई। इस नीति के जरिए अब टेलीकॉम ऑपरेटर्स से सिम कार्ड के गलत इस्तेमाल पर रोक सुनिश्चित कराई जाएगी। ऐसा नहीं है कि सरकार की तरफ से सिम कार्ड को लेकर पहले से कोई नीति नहीं है, लेकिन अब जो नियम लागू हुए हैं, उनसे सरकार की ओर से सिम कार्ड के निगरानी तंत्र को और मजबूत किया जाएगा।

नहीं, ग्राहकों के लिए सिम कार्ड रखने की मूल सीमा में कोई बदलाव नहीं किया गया है। भारत के अधिकतर हिस्सों में एक व्यक्ति अपने नाम पर अधिकतम नौ मोबाइल कनेक्शन (सिम) रख सकता है। वहीं जम्मू-कश्मीर, असम और उत्तर-पूर्वी राज्यों में यह सीमा छह सिम कार्ड की है। यह सीमा सभी टेलीकॉम ऑपरेटर्स और सर्विकलों को मिलाकर लागू होती है। सिम की सीमा को लेकर नियम तो पहले से हैं, हालांकि इनका कड़ाई से अब तक पालन नहीं होता। सरकार 24 अगस्त से एक ग्राहक के पास मोबाइल कनेक्शनों की सीमा को सख्ती से लागू करने जा रही है। आज से टेलीकॉम ऑपरेटर्स, जैसे- जियो, एयरटेल, वोडाफोन आइडिया, बीएसएनएल के लिए नया सिम जारी करने से पहले यह जांचना अनिवार्य कर दिया गया है कि ग्राहक के नाम पर पहले से कितने सिम पंजीकृत हैं। अगर ग्राहक पहले ही अपनी तय सीमा तक पहुंच चुका है, तो उसे नया सिम देने से मना कर दिया जाएगा। सामान्य ग्राहक जिनके पास तय सीमा के अंदर सिम कार्ड हैं, उन्हें इस बदलाव से किसी तरह की परेशानी का



सामना नहीं करना पड़ेगा। उनके सभी मोबाइल कनेक्शन सामान्य रूप से काम करते रहेंगे। ऐसे ग्राहक अपनी निर्धारित सीमा (नौ या छह सिम) तक नए सिम कार्ड बिना किसी समस्या के खरीद सकते हैं। नए कनेक्शन के लिए ग्राहक को ऑपरेटर की सामान्य केवाईसी प्रक्रिया का ही पालन करना होगा।

अगर किसी ग्राहक के पास सिम की संख्या अधिकतम सीमा (नौ या छह) तक पहुंच चुकी है, तो कोई भी टेलीकॉम ऑपरेटर ऐसे ग्राहक को नया सिम कार्ड जारी नहीं करेगा। ऐसी स्थिति में ऑपरेटर आपको सूचित करेगा कि आप अपनी कानूनी सीमा पार कर चुके हैं। अगर किसी ग्राहक के पास पहले ही तय सीमा से ज्यादा सिम हैं तो नए नियमों के लागू होने पर मौजूदा सभी नंबर अचानक काम करना बंद नहीं करेंगे। हालांकि, अतिरिक्त कनेक्शनों के खिलाफ मूसरंचार विभाग के मौजूदा नियमों के तहत कार्रवाई की जा सकती है। तय कनेक्शन की सीमा के अंतर्गत लाने के लिए टेलीकॉम विभाग उपभोक्ताओं को अपने अतिरिक्त नंबरों को सरेंडर (लौटाने), ट्रांसफर (स्थानांतरित) या डिस्कनेक्ट (बंद) करने का विकल्प देता है।

महिला प्रदर्शनकारियों की शिकायतों पर कोर्ट गंभीर

जंतर-मंतर पर यौन उत्पीड़न की जांच पहले होगी

नई दिल्ली (ए)। चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने सोमवार को स्पष्ट किया कि जंतर-मंतर पर छत्र प्रदर्शनों के दौरान पुलिस हिंसा के आरोपों की जांच के लिए गठित हाई-पावर्ड एन्कायरी कमेटी महिला प्रदर्शनकारियों द्वारा लगाए गए यौन उत्पीड़न और दुर्व्यवहार के आरोपों की प्राथमिकता के आधार पर जांच करेगी। CJJ ने कहा कि 18 अगस्त के आदेश के अनुसार, कमेटी को महिला प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कथित यौन हिंसा, उत्पीड़न, छेड़छाड़ और अन्य प्रकार की हिंसा से जुड़ी शिकायतों पर प्राथमिकता से विचार करते हुए जल्द से जल्द



अंतरिम रिपोर्ट दाखिल करनी है। **20 जुलाई के प्रदर्शन से उठा मामला**—यह मामला तब सामने आया, जब सीनियर एडवोकेट शोभा गुप्ता ने 20 जुलाई को जंतर-मंतर पर हुए छत्र प्रदर्शन के दौरान महिला प्रदर्शनकारियों के साथ कथित यौन उत्पीड़न के मामलों पर सुप्रीम कोर्ट से स्वतः संज्ञान लेने

का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि महिला प्रदर्शनकारियों ने पुलिसकर्मियों द्वारा कथित छेड़छाड़ और यौन उत्पीड़न की शिकायतें की हैं। **इसी मुद्दे पर अलग रिट याचिका भी दायर**—इस पर जस्टिस जाँयमाल्य बागची ने बताया कि इसी मुद्दे को लेकर एक अलग रिट याचिका भी दायर की गई है और हाई-पावर्ड कमेटी को मामले की जांच करने के लिए कहा गया है। CJJ ने कहा कि कमेटी के अध्यक्ष को शिकायतें प्राप्त करने के लिए नोडल अधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार दिया गया है।

पांच सदस्यीय कमेटी करेगी आरोपों की जांच

सुप्रीम कोर्ट ने पिछले सप्ताह पूर्व न्यायाधीश जस्टिस आर. सुभाष रेड्डी की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय हाई-पावर्ड कमेटी गठित की थी।

महिला प्रदर्शनकारियों की शिकायतों को मिलेगी प्राथमिकता

कमेटी को विशेष रूप से महिला प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कथित हिंसा, उत्पीड़न, छेड़छाड़ और किसी भी प्रकार के द्वितीयक उत्पीड़न की शिकायतों की प्राथमिकता के आधार पर जांच करने को कहा गया है।

छत्तीसगढ़ की कला-संस्कृति के पाठ पढ़ेंगे 6वीं से 12वीं तक के बच्चे

रायपुर। छत्तीसगढ़ के स्कूली छात्र कक्षा 6वीं से 12वीं तक स्थानीय कला, संस्कृति, परंपराओं और लोकजीवन से जुड़े विशेष पाठ पढ़ेंगे, जिससे नई पीढ़ी अपनी माटी और संस्कृति से गहरे से जुड़ सकेगी। छत्तीसगढ़ की समृद्ध कला, संस्कृति, इतिहास, धरोहर, स्थापत्य, लोक परंपराओं, गीत-संगीत, संतों, महापुरुषों और रचनाकारों को नई पीढ़ी से जोड़ने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा महत्वपूर्ण पहल की जा रही है। इसी उद्देश्य से राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद , शंकर नगर रायपुर में 24 से 26 अगस्त तक त्रि-दिवसीय आवासीय कार्यशाला आयोजित की जा रही है।



सुमित थोड़वे ने पूछताछ में बताया कि आगे बाइक से दो लोग पायलटिंग कर रहे हैं। पुलिस ने तत्काल घेराबंदी कर बाइक क्रमांक OD 08 W 5814 पर सवार पंकज मोहिते और जलंधर खम्हारी को भी धर दबोचा।

पूछताछ में तस्करों ने गांजा ओडिशा के कालाहांडी जिले के आमपानी थाना क्षेत्र के डोंगागुड़ा निवासी विनोद दिसारी से लेना बताया। गरियाबंद पुलिस ने तत्काल टीम भेजकर सप्तायर विनोद दिसारी को भी उसके गांव से गिरफ्तार कर लिया। उसके पास से गांजा बिक्री के 5 लाख रुपये बरामद किए गए।



विचार-पक्ष

संपादकीय

गौर का बताना भारत के पक्ष में झुका हुआ लगता है, लेकिन जम्मू-कश्मीर को भारत का 'अभिन्न हिस्सा' के बजाय 'महत्वपूर्ण' हिस्सा बताना एक सुविधा की कूटनीति भी हो सकती है। भारत में अमेरिका के राजदूत सर्जियो गोर ने जम्मू-कश्मीर के बारे में जो राय जाहिर की है, उसकी अपनी अहमियत है। खासतौर पर अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में अमेरिका को जिस नजर से देखा जाता है, उसमें उसकी प्रतिक्रिया को किसी पक्ष या

निपक्ष को मिलने वाले महत्त्व को नजर से देखा जाता है। ऐसी स्थिति में जिसका राजदुत के रूप में सर्जियो गोर ने अमेरिका जम्मू-कश्मीर को भारत का एक 'महत्वपूर्ण हिस्सा' बताया, उसे इस मुद्दे पर अमेरिका के बदलते रुख के संकेत के तौर पर भले देखा जा रहा हो, लेकिन यह सवाल भी उठता है कि उनका यह बयान भारत के हिलाजु से किताना अहम है। इसके अलावा, गोर ने जम्मू-कश्मीर के लिए जारी अमेरिकी यात्रा परामर्श

समीक्षा करने की भी बात। दरअसल, कूटनीति की दुनिया में कई शब्दों की बारीकियों के जरिए जिस दृश्य की रचना की जाती है, उसका रंग प्रभाव के स्तर से लग पाता है। ऐसे जो जम्मू-कश्मीर बिना किसी सवाल के त का अभिन्न हिस्सा है, उसके बारे में नें यों गोर को अलग से कूड़ राय जाहिर की की जरूरत क्यों महसूस हुई? फिर 'भैरव हिस्से' के बजाय 'महत्त्वपूर्ण

हिस्सा' बताने को भारत में किस नजर से देखा जाएगा! गौरतलब है कि अमेरिका परंपरिक तौर पर जम्मू-कश्मीर को भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय बातचीत के जरिए सुलझाने का हामी रहा है। यही नहीं, एकाध मौकों पर अमेरिका ने कश्मीर मामले में मध्यस्थता भी भूमिका निभाने की पेशकश की थी, लेकिन भारत ने उसे खारिज कर दिया था। यों कई संदर्भों में चूँकि पाकिस्तान को लेकर अमेरिका की दृष्टि

ब त क एक अप्रत्यक्ष नरमी दिखाई देती है और पश्चिम एशिया में युद्ध के बीच में कुछ समय से दोनों के बीच थोड़ी सी बढ़ती देखी गई है, इसलिए इस बात आशा का हो सकती है कि अमेरिका का कई बार जरूरत और सुविधा के लेबल की संचालित होता है। ऐसे में यह भी की जरूरत होगी कि गोर के बयान के पाकिस्तान ने जिस तरह तीखी आपत्ति न की है, उसमें अमेरिका आगे क्या रुख

अन्याता है। इसमें कोई दोराय नहीं कि भारत में जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर किसी अन्य देश को किसी भी स्तर पर दखल देने की जरूरत नहीं है। इस मसले पर भारत ने संयुक्त राष्ट्र सहित समूची दुनिया में स्थिति बिल्कुल स्पष्ट करके रखी है। इसके बावजूद समय-समय पर जम्मू-कश्मीर को लेकर पाकिस्तान की ओर से नाहक दखलंदाजी और बयानबाजी के अलावा एक नकारात्मक संदेश देने की कोशिश होती रही है।

किशोरों और बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए यूरोप के कई देशों ने पंद्रहवां सोलह साल से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर पाबंदी लगानी शुरू कर दी है। इसका अगुआ होने का श्रेय ऑस्ट्रेलिया को है, जिसने 16 साल से कम उम्र के बच्चों के इंस्टाग्राम, फेसबुक, टिकटॉक, एक्स यानी ट्विटर और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्मों के इस्तेमाल पर पाबंदी लगा दी है। इसी तरह फ्रांस ऐसा कानून बनाने वाला यूरोप का पहला देश हो गया है। वहां की संसद ने पंद्रह साल तक के बच्चों के सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर रोक लगाने का कानून पारित कर दिया है। हालांकि यह कानून खटाई में पड़ गया है। फ्रांस के सर्वोच्च न्यायालय ने इस कानून को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लंघन माना है।

तार्कि बचा रहे बचपन

(उमेश चतुर्वेदी)

जिस पश्चिमी दुनिया में सोशल मीडिया का आविष्कार हुआ, जिन्होंने कभी अरब देशों में क्रांति के लिए सोशल मीडिया की सलाहना की थी, अब उन्हें ही यह माध्यम अपने ही बच्चों का दुश्मन लगाने लगा है। इसकी वजह है, वहाँ के बच्चों और किशोरों का बिगड़ता मानसिक स्वास्थ्य और पढ़ाई का गिरता स्तर।

किशोरों और बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए यूरोप के कई देशों ने पंद्रह या सोलह साल से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर पाबंदी लगानी शुरू कर दी है। इसका अगुआ होने का श्रेय ऑस्ट्रेलिया को है, जिसने 16 साल से कम उम्र के बच्चों के इंस्टाग्राम, फेसबुक, टिकटॉक, एप्स यानी ट्विटर और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्मों के इस्तेमाल पर पाबंदी लगा दी है। इसी तरह फ्रांस ऐसा कानून बनाने वाला यूरोप का पहला देश हो गया है। वहाँ की संसद ने पंद्रह साल तक के बच्चों के सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर रोक लगाने का कानून पारित कर दिया है। हालाँकि यह कानून खटाई में पड़ गया है। फ्रांस के सर्वोच्च न्यायालय ने इस कानून को अप्रैल्विक की स्वतंत्रता का उल्लंघन माना है। अदालत का कहना है कि नाबालिग पर प्रतिबंध लगाने के चक्कर में यह कानून असल में हर नागरिक पर सोशल मीडिया का उपयोग करने से पहले अपनी उम्र साबित करने का बर्बाद बनाता है। फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुअल मैक्रों इस कानून के प्रबल समर्थक हैं। अदालत के फैसले के बाद उन्होंने कहा है कि इस कानून को लागू करने के लिए अदालती फैसले के पड़ने तक जरूरी सुधार करके फिर से इसे संसद से पारित कराया जाएगा।

फ्रांस के इस फैसले से स्पष्ट है कि वह किशोरों के सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर लगाम लगाने के लिए पीछे नहीं हटने जा रहा है। जिस पश्चिमी दुनिया में सोशल मीडिया का आविर्भाव हुआ, जिन्होंने कभी अरब देशों में क्रांति के लिए सोशल मीडिया का सहारा नहीं लिया, अब उन्हें ही यह माध्यम अपने ही बच्चों का दुश्मन लगने लगा है। इसकी वजह है, वहां के बच्चों और किशोरों का बिगड़ता मानसिक स्वास्थ्य और पढ़ाई का गिरता स्तर। इसकी वजह से अमेरिका तक में सोशल मीडिया कंपनियों के खिलाफ लोगों में नाराजगी दिख रही है। प्रसिद्ध न्यूज एंजेंसी रायटर्स ने अप्रैल 2015 के आसपास के साथ हाल ही में एक सर्वे किया है। इसमें शामिल 61 फीसद लोगों ने कहा कि सोशल मीडिया कंपनियों पर सरकार को और सख्त निगरानी रखनी चाहिए। इस सर्वे में शामिल 66 प्रतिशत लोग तो 16 साल से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया इस्तेमाल पर रोक लगाने के लिए उम्र के प्रमाणिकरण की प्रक्रिया लागू करने पर जोर दिया है। वैसे अमेरिका के प्लेबोरो प्रैसी के कुछ राज्यों में चौदह साल से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया इस्तेमाल पर रोक है।

दुनियाभर में बच्चे और किशोरों के सोशल मीडिया इस्तेमालालाइन पर गौरव के लिए उनके मानसिक स्वास्थ्य में आ रही गिरावट औरों सोशल मीडिया के बढ़ते मानसिक तनाव को जिम्मेदार माना जा रहा है। कई शोधों से पता चला है कि लगातार स्क्रीन देखने और सोशल मीडिया के इस्तेमाल से बच्चे दूसरों की लाइफस्टाइल से खुद की तुलना करने लगते रहते हैं। इससे उनमें हीढ़ा भावना, तनाव और डिप्रेशन बढ़ रहा है। इसकी वजह से उनकी नींद में कमी हो रही है। देर रात तक

फोन चलाने के कारण भी बच्चों की सोने की आदत बिगड़ रही है। इससे उममें चिड़चिड़ाहट बढ़ रही है। जिससे उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ रहा है। जानकारों का मानना है कि सोशल मीडिया ऐसक का अलगांरिदम ऐसा है, जिससे बच्चे-बच्चे ही नहीं, बड़े भी ऐसके लत का शिकार हो रहे हैं। इससे वे स्क्रीन के आदी हो रहे हैं। कई बार कम उम के बच्चों के सामने आलहत्या, हिंसा या उम के हिंसाब से गलत सामग्री भी आती है। वैसे सोशल मीडिया का अलगांरिदम ऐसा है कि नकारात्मक, हिंसा प्रधान और सेक्स से जुडी खबरे और दुश्य जल्दी वारल होतें हैं। सोशल मीडिया ट्रेलिंग और अभद्र टिप्पणियों का बडा और आसान माध्यम बन गया है। इनकी वजह से बच्चे मानसिक प्रताड़ना का

A person with dark hair, wearing a blue shirt, is seen from the back, looking up at a large, leafy tree. The tree has thick, gnarled branches and dense green foliage. The background is a soft, hazy green, suggesting a misty or overcast day.



शिकार हो रहे हैं। बच्चों को फंसाने वाले अपराधी उन्हें आसानी से अपना शिकार बना लेते हैं। इसीलिए दुनिया में कई देशों की सरकारों बच्चों के लिए सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर रोक लगाने की तैयारी में हैं।

रोक लगाने वाले में इंडोनेशिया भी शामिल हो चुका है, जिसेमार्च 2026 से इससे नियम लागू कर दिए हैं। इनके अनुसार, 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए यूट्यूब, टिकटॉक, फेसबुक और ओर्बोक्स जैसे हार्ड-रिस्क प्लेटफॉर्म पर पाबंदी लगा दी गई। इंडोनेशिया की तरह मलयेशिया ने भी ऑनलाइन सुरक्षा अधिनियम के तहत 16 साल से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया अकाउंट बनाने पर रोक लगा रखी है। संयुक्त अरब अमीरात ने बच्चों के लिए सोशल मीडिया के लिए न्यूनतम उम्र 15 वर्ष तय की है। इससे कम उम्र के बच्चों के अकाउंट बनाने/उपयोग पर यहाँ पूरी तरह रोक है। यूरोप के देश डेनमार्क में 15 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया ब्लॉक करने का कानून बना चुका है। बच्चों की उम्र की जांच के लिए सरकार डिजिटल एवबिडेंस ऐप पर काम कर रही है। इसी तरह ब्रिटेन की सरकार ने भी 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर

प्रतिबंध लगाने की घोषणा की है, जो जनवरी 2027 से प्रभावी होने जा रही है। तुर्की में भी 15 साल से कम उम्र के बच्चों को सोशल मीडिया से दूर रखने के लिए कानून को मंजूरी मिल चुका है, जिसे 2026 के अंत तक लागू किया जाना है। चीन में किशोरों के लिए सोशल मीडिया पर पूरी तरह पाबंदी तो नहीं है, लेकिन उनके लिए सख्त माइनर मोड लागू है, जो रात के समय सोशल मीडिया ऐप्स के इस्तेमाल और स्क्रीन टाइम को सीमित करता है। ब्राजील का बाल एवं किशोर डिजिटल कानून 17 मार्च, 2022 से लागू हो चुका है। जिसके तहत 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों को अपने सोशल मीडिया खाते को माता-पिता या कानूनन अभिभावक से जोड़ना अनिवार्य है। इसके अलावा, यह कानून

A painting of a boy in an orange shirt swinging on a tree branch while another boy in a blue shirt watches. The scene is set in a lush, green forest with sunlight filtering through the trees. The boy on the swing is in mid-air, and the boy on the ground is looking up at him. The painting has a soft, painterly style with visible brushstrokes.

युवाओं के लगातार स्कॉल जैसी आदतों पर प्रतिबंध लगाता है। जर्मनी में भी ऐसी तरह का नियम लागू हो चुका है। स्वीडन राज्य भी कई अन्य देश भी ऐसी तैयारी में है। अपने यहां कान्ट्रिड सभ्यता को ऐसे कानून पर काम कर रहा है। जबकि नोएडा के जिला प्रशासन ने स्कूलों में ऑल्लाइन के इस्तेमाल को सीमित करने का निर्देश दिया है। विदेशों की तुलना में जरा भारत को देखिए, यहां दिव्ख के जंतर-मंतर पर युवाओं और किशोरों ने जिस तरह अभय और अश्लील गालियों का कैमरे के सामने प्रदर्शन किया, उसे सोशल मीडिया के जरिए पूरी दुनिया ने देखा है। दिलचस्प है कि इस प्रगतिशील बौद्धिकों के एक वर्ग ने समर्थन किया। दो राय नहीं सोशल मीडिया का इस्तेमाल अगर सही तरीके से किया जाए तब उसकी पहुँच और त्वरा समाज को कई तरह के फायदे दिला सकती है। खासियाँ उजागर करके तंत्र पर दबाव बनाया जा सकता है। लेकिन हमें यह स्वीकार करने की हिचक नहीं होनी चाहिए कि देश में सोशल मीडिया अर्धनम्रता और अश्लीलता का वाहक बनत जा रहा है। इन्फ्लुएन्सर बनने, रीच बढ़ाने और लाइक के जरिए कमाई के चक्र में शरीर परिवारों की महिलाओं को भी अंग प्रदर्शन से परहेज नहीं रहा।

जिनपिंग की भारत यात्रा- बॉर्डर पर तैनाती और निगरानी बढ़ाने का समय आ गया

(संतोष कुमार पाठक)

भारत-चीन संबंधों के बीच सबसे बड़ी विडंबना शीघ्र नेताओं के दौर के जवाब या दौरे के आसपास ही शुरू होती है। आमतौर पर जब भी किसी दो देशों के बीच शीघ्र स्तर पर यात्रा की कोई योजना बनती है तो दोनों ही देश, इस बात को सुनिश्चित करते हैं कि यात्रा से पहले और यात्रा के दौरान तो कम से कम कहीं कोई तनाव पैदा हो। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत आने की तैयारी कर रहे हैं। भारत यात्रा के दौरान चीन के राष्ट्रपति 18वें ब्रिक्स सम्मेलन में शामिल होंगे। जिनपिंग इससे पहले वर्ष 2019 में लिखर वार्ता के लिए भारत आए थे। चीनी राष्ट्रपति के भारत यात्रा के दौरान जाहिर तौर पर दोनों देशों के बीच शीघ्र स्तर पर भी बातचीत होगी। हाल के दिनों में भारत चीन सीमा पर खासकर अरुणाचल प्रदेश को लेकर जो खबरें आ रही हैं, उसने पूरे देश को चिंतित कर दिया है। बदले माहौल में अब भारत की कोई भी सकारात्मक शान्ति और व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने के नाम पर पड़ोसी देश की इस तरह की नापाक हरकतों को ठंडे बस्ते में नहीं डाल सकता है। ऐसी में नई दिल्ली में स्वागत की तैयारियों से भी ज्यादा जरूरी साजो-सामान के साथ 24 घंटे रेडि मोड में रखना। चीन का इतिहास भी यही बताता है कि भारत को अब और ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत है। भारत-चीन संबंधों के बीच सबसे बड़ी विडंबना शीघ्र नेताओं के दौर के दौरान या दौरे के आसपास ही शुरू होती है। आमतौर पर जब भी किसी दो देशों के बीच शीघ्र स्तर पर यात्रा की कोई योजना बनती है तो दोनों ही देश, इस बात को सुनिश्चित करते हैं कि यात्रा से पहले और यात्रा के दौरान तो कम से कम कहीं कोई तनाव न पैदा हो। लेकिन चीन इसके बिनाकुल उल्टा करत है। चीन का इतिहास यह बताता है कि भारत की तरफ से संबंध सुधारने के लिए जब भी शीघ्र स्तर पर कोई नेता चीन जाता है या फिर भारत के

निमंत्रण पर जब भी चीन से कोई शीर्ष नेता भारत आता है तो अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति और राजनयिक शिक्षाचार को पूरी तरह से धत्ता बताते हुए चीन की सेना सीमा पर खुफ़ारित शुरू कर देती है। एक तरफ शीर्ष स्तर पर बातचीत, शांति और व्यापारिक संबंधों के ढोल बज रहे होते हैं तो वहीं दूसरी तरफ चीन की सेना भारत के क्षेत्र



में जबरदस्ती घुसपैठ करने और भारतीय सेना से लड़ती-भिड़ती नज़र आती है। आपको बता दें कि, चीन की सेना पाकिस्तानी सेना की तरह बेलगाम नहीं है यानी चीन की सेना जो कुछ भी करती है वह राष्ट्रपति की मंजूरी से ही करती है। वैसे तो शींषं स्तर पर यात्राओं के दौरान चीन की इस तरह की हरकतों का लंबा इतिहास रहा है। लेकिन आपके सामने कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को उदाहरण के तौर पर रख देते हैं। वर्ष 2003 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री चीन बिहारी वाजपेयी की चीन यात्रा के दौरान ही चीनी सेना की एक टुकड़ी ने अण्णचल प्रदेश के अरुण सुबनसिरी जिले के अस्फीला इलाके में **रू** पार

करके भारतीय सीमा में न केवल घुसपैठ किया था बल्कि भारतीय सैनिकों की एक छोटी सी टुकड़ी से उनके हाथों हथियार तक छीन लिए थे। चीनी सेना ने इससे भी बड़ी लड़ाई नापाक हरकत वर्ष 2013 में अपने ही प्रधानमंत्री लोक केकियांग के भारत दौरे से पहले की थी। मनमोहन सिंह सरकार के दौरान वर्ष 2013 में चीनी प्रधानमंत्री की

A large blue airplane with the Chinese flag on its side and a red staircase leading up to it. The flag features a red field with five golden-yellow stars. The airplane has multiple windows visible along its fuselage. The scene is set against a clear blue sky.

भारत यात्रा से पहले पीएलएफ यांनी चीनी सेना पूर्वी लद्दाख (भारतीय क्षेत्र) में 19 किलोमीटर तक न केवल अंदर घुस आई थी बल्कि वहां तंबू लगाकर कब्जा भी कर लिया था। दोनों देशों की सेनाएं आमने-सामने आ गई थी और लगभग 20 दिनों तक यह गतिरोध बना रहा था। नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद वर्ष 2014 में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने भारत यात्रा पर आए। जिनपिंग के भारत पहुंचने से महज कुछ घंटे पहले ही चीन की सेना ने लद्दाख में घुसपैठ कर, अवैध तरीके से सड़क बनाना शुरू कर दिया। यहां भी दोनों देशों की सेनाएं लगभग दो सप्ताह

कह आम्हने-सामने खड़ी रही। इस तरह के अनंगित उदाहरण भर पेड़े हैं जब भारत और चीन के शीर्ष नेता बादचीत कर रहे थे या बादचीत करने की तैयारी कर रहे थे, ठीक उसी समय चीन की सेना नापाक हककतें कर रही थी। ऐसमें में बड़ा सवाल तो यही खड़ा हो रहा है कि क्या चीन सितंबर के महीने में बाँडर पर फिस से कोई बड़ी खुपफात करके की योजना तो नहीं बना रहा है ? यह सवाल इसलिए खड़ा हो रहा है क्योंकि भारत में 12-13 सितंबर की 18वाँ बिक्स सम्मेलन होने जा रहा है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इसमें शामिल होने के लिए भारत आएंगे। चीन के राष्ट्रपति के भी इस सम्मेलन में आने की तैयारियाँ चल रही हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, भारत के विदेश मंत्रालय के सूत्र यह बता रहे हैं कि निनपिंग के दौरे की अभी आधिकारिक तौर पर औपचारिक सूचना भले ही न मिली हो लेकिन एडवांस टीमाँ के दौरे और बाकी तैयारियों से यह लग रहा है कि वह भारत आ सकते हैं। अगर ऐसा है तो भारत और चीन की सीमा पर चौकसी को और ज्यादा बढ़ाने का समय आ गया है। बाँडर से लगाती भारत की हर चौकी पर सेना को पूरी ताकत और साजो-सामान के साथ तैनात करना पड़ेगा। वहां पर संचार के साधन और बिजली की उपलब्धता को हर हाल में सुनिश्चित करने वाली व्यवस्था करनी होगी। रिजर्व फौज को भी तैयार रखना होगा ताकि आपात स्थिति में तुरंत मदद पहुंचाई जा सके। दोनों देशों के बीच सीमा पर हथियार नहीं चलाने का समझौता हो रहा है तो ऐसमें में जाँहिर तौर पर लड़ने के लिए अगर तरह की तैयारियाँ तो करनी ही पड़ेगी। इस तरह के हालात में सैन्य साजो-सामान, हथियार, बेहतर संचार के साधन, 24 घंटे बिजली की उपलब्धता, बेहतर सड़क और खाने-पीने के सामानों की भरपूर उपलब्धता के साथ ही बड़ी-बड़ी नुकीले कील लगे डंडे की भी जरूरत पड़ती है।

संक्षिप्त समाचार

हेवाब की कॉलेज रोमांस कहानी ने लिया नया मोड़, कलर्स का ‘तू जूलियट जट्ट दी’ चार साल की लीप के साथ

कलर्स के शो ‘तू जूलियट जट्ट दी’ अपनी लव स्टोरी से दर्शकों का दिल जीतने के बाद अब कॉलेज का नया सिलेबस लिखने जा रहा है। शो में चार महीने का लीप आते ही कैंपस में रोमांस, राइवली और ड्रामा की नई शुरुआत होगी। हीर और नवाब का रिश्ता पहले ही कई दिल टूटने वाले मोड़ देख चुका है, लेकिन अब उनकी कहानी और भी उलझने वाली है। चार महीने बाद हीर (जसमीत कौर) और नवाब (सैयद रज़ा अहमद) सीनियर इंयर में दाखिल हो चुके हैं। नवाब, जो पहले जिंदगी को हल्के-फुल्के अंदाज़ में जीता था, अब जिम्मेदारियों को संभालते हुए गंभीर हो गया है। वहीं हीर हर मौके पर उसे ताना मारती है, और दोनों के बीच की ठंडी जंग अधूरी भावनाओं को और गहरा कर देती है। और ठीक उसी समय जब सीनियर्स को लगा कि उन्होंने कैंपस के हर ट्विस्ट देख लिए हैं, कॉलेज के गेट से एक नई बैच एंट्री करती है और हीर और नवाब की दुनिया में नई वाइब लेकर आती है। इस नई टोली का हिस्सा है वारिस (नितिन गुलरिया), एक बिंदास लेडीज़ मैन जो कॉलेज लाइफ को पूरी तरह एंजॉय करने के लिए तैयार है। फिर है साहिबा (श्रेय जैन), एक लड़की जिसके बड़े सपने हैं और उससे भी बड़ा राज़। इस तिकड़ी को पूरा करता है प्तेह (पवनीत सिंह), एक म्यूज़िशियन जो मानता है कि उसका गिटार ही उसे प्यार तक पहुंचा सकता है। लेक्रस, राइवली, नई दोस्तियां और फ्रन्डे को तैयार राजों के बीच क्या ये नई बैच हीर और नवाब को फिर से करीब लाएगी या उन्हें और दूर कर देगी? हीर की इमोशनल जर्नी साझा करते हुए जसमीत कौर ने कहा, मैं बेहद आभारी हूँ कि ‘तू जूलियट जट्ट दी’ को जितना प्यार और सराहना मिली है, उसने इस नए चैप्टर को मेरे लिए और भी खास बना दिया है। हीर अब उस इंसान का साथी बन चुकी है जो वो कभी थीं धोखे से टूटी हुई। अब उसे पुराने हीर की तलाश भी नहीं है। वह अपने दर्द में इतनी डूबी हुई है कि उसे बेफ़िक्र, निडर और खुश रहना कैसा होता है, यह लगभग भूल चुकी है। और इसी बीच नई बैच की एंट्री होती है। मैं इस टैलेंटेड ट्रायो को हमारे वर्कड में वेलकम करने के लिए बहुत उत्साहित हूँ। उनके किरदार इतनी ऊर्जा, अलग-अलग पर्सनैलिटी और अनपेक्षित हालात लेकर आते हैं कि मुझे लगता है दर्शकों को हीर और नवाब की जिंदगी में आने वाले बदलाव और संतुलन को देखते हुए बहुत मज़ा आएगा। नवाब के ट्रांसफॉर्मेशन और नई बैच पर बात करते हुए सैयद रज़ा ने कहा, मुझे लगता है कि नई जनरेशन से हमेशा कुछ नया सीखने को मिलता है और हम ‘तू जूलियट जट्ट दी’ में इसे वेलकम करने के लिए बेहद उत्साहित हैं।

सैमसंग टीवी प्लस इंडिया ने 200 चैनलों तक किया विस्तार, एनएच स्टूडियोज़ के साथ साझेदारी

रायपुर: सैमसंग टीवी प्लस इंडिया ने अपनी सामग्री पेशकश को 200 स्ट्रीमिंग टीवी चैनलों तक विस्तारित किया है, जिससे भारत में लाखों दर्शकों को मनोरंजन के अधिक विकल्प मिलेंगे। इस विस्तार के तहत सैमसंग टीवी प्लस ने एनएच स्टूडियोज़ के साथ साझेदारी कर दो नए चैनल—आशीर्वाद टीवी और थलाइवर हिट्स—लॉन्च किए हैं। ये चैनल देशभर के दर्शकों तक कालजयी पौराणिक कहानियाँ और प्रतिष्ठित भारतीय सिनेमा पहुंचाएंगे। भारत के कनेक्टेड टीवी इकोसिस्टम में अपने बढ़ते प्रभाव को रेखांकित करते हुए सैमसंग टीवी प्लस इंडिया को बीसीएस रत्न अवॉर्ड्स में ‘सीटीवी प्लेटफॉर्म ऑफ़ द ईयर’ के सम्मान से भी नवाज़ा गया है। विश्वभर में 10 करोड़ से अधिक मासिक सक्रिय उपयोगकर्ताओं के साथ Samsung टीवी प्लस दुनिया की सबसे बड़ी सब्सक्रिप्शन-रहित स्ट्रीमिंग सेवाओं में से एक है, जो Samsung स्मार्ट टीवी में पहले से इंस्टॉल रहती है। भारत में यह प्लेटफ़ॉर्म मनोरंजन, फिल्में, समाचार, खेल और क्षेत्रीय सामग्री जैसी विभिन्न श्रेणियों में लगातार विस्तार कर रहा है और उपयोगकर्ताओं को बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के प्रीमियम सामग्री को विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध कर रहा है। आशीर्वाद टीवी - पर रामायण, श्री गणेश और नमः शिवाय जैसे पौराणिक महाकाव्यों सहित कालजयी हिंदी मनोरंजन की चुनिंदा सामग्री उपलब्ध होगी। वहीं, तमिल फिल्म चैनल थलाइवर हिट्स पर महान फिल्मी सितारों—रजनीकांत, जिन्हें खेहपूर्वक थलाइवर कहा जाता है, और कमल हासन—की कंट क्लासिक और ब्लॉकबस्टर फिल्मों का संग्रह प्रस्तुत किया जाएगा। इसमें कई कोडुकुम और थम्बिक्कु एप्था ऊरु जैसी फिल्में शामिल हैं।

नवाज शरीफ की 2019 वाली स्क्रिट दोहरा रहे इमरान, इलाज के नाम पर हो चुकी है डील

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान की राजनीति में जेल, अदालत और सत्ता का रिश्ता हमेशा बेहद उलझा हुआ रहा। अब पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के स्वास्थ्य को लेकर पैदा हुआ नया विवाद इसी पुराने राजनीतिक पैटर्न की याद दिला रहा है। 18 अगस्त 2026 को पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने जेल में बंद इमरान खान को अस्पताल ले जाने का आदेश दिया। इसके दो दिन बाद सरकार ने संकेत दिया कि अगर जरूरत पड़ी तो उन्हें इलाज के लिए विदेश भी भेजा जा सकता है, लेकिन इसके लिए कानूनी प्रक्रिया का पालन करना होगा।

यही वजह है कि 2019 का नवाज शरीफ प्रकरण फिर चर्चा में आ गया। उस समय भी मामला जेल में बंद एक पूर्व प्रधानमंत्री की बिगड़ती सेहत से शुरू हुआ था। मेडिकल आधार पर राहत मिलने के बाद नवाज शरीफ को इलाज के लिए लंदन जाने की अनुमति मिली थी। उनकी मौजूदा चिकित्सा स्थिति तथा कानूनी स्थिति अलग है। इसलिए सवाल डील

भारतीय खाना ट्रेंड में, पाकिस्तान में चाट और ढाका में साड़ी की मांग बढ़ी

न्यूयॉर्क/लाहौर/ढाका, एजेंसी। भारतीय खानपान और पहनावे का आकर्षण अब भारत की सीमाओं से बाहर भी साफ दिखाई दे रहा है। पाकिस्तान में दिल्ली की चाट, अमृतसरी कुलचे और मुगलई व्यंजन पसंद किए जा रहे हैं, जबकि ढाका की शादियों में बनारसी, कांजीवरम और चंदेरी साड़ियों की मांग बनी हुई है। अमेरिका में क्षेत्रीय भारतीय भोजन प्रमुख खानपान रझानों में शामिल हुआ है। ऐसे में सवाल है कि क्या सांस्कृतिक पसंद राजनीतिक सीमाओं से ज्यादा मजबूत साबित हो रही है

भारतीय संस्कृति का असर खानपान और पहनावे के जरिए दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में दिखाई दे रहा है। अमेरिका से लेकर पाकिस्तान और बांग्लादेश तक भारतीय व्यंजन और पारंपरिक परिधान लोगों की पसंद बन रहे हैं। पाकिस्तान के लाहौर और कराची में दिल्ली की चाट, अमृतसरी कुलचे, मुगलई व्यंजन और कोलकाता काठी रोल आकर्षण का केंद्र हैं। दूसरी तरफ ढाका में बनारसी,

कांजीवरम और चंदेरी साड़ियां खासतौर पर शादियों में पसंद की जा रही हैं। यह स्थिति इसलिए दिलचस्प है क्योंकि राजनीतिक स्तर



पर मतभेदों के बावजूद लोगों की सांस्कृतिक पसंद अलग दिशा में चलती दिखाई दे रही है। अमेरिका में क्षेत्रीय भारतीय खाने की मांग

क्यों बढ़ी अमेरिका में भारतीय भोजन की तस्वीर पिछले कुछ समय में बदली है। भारतीय खाना पहले अक्सर सामान्य करी



तक सीमित समझा जाता था, लेकिन अब अमेरिकी उपभोक्ताओं की दिलचस्पी भारत के अलग-अलग क्षेत्रों के व्यंजनों में बढ़ रही है।

कनाडा पर फूटेगा ट्रंप का टैरिफ बम: यूएस के साथ व्यापार वार्ता नाकामयाब, कनाडाई उत्पादों पर लगेगा 50 प्रतिशत शुल्क

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका शनिवार तड़के कनाडा के करीब 20 अरब डॉलर मूल्य के उत्पादों पर 50 प्रतिशत शुल्क लगाने वाला है। आखिरी समय में हुई बातचीत के बावजूद दोनों देशों के बीच व्यापार समझौते को लेकर सहमति नहीं बन सकी। इससे पहले से तनावपूर्ण संबंधों में और खटास बढ़ गई है। अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि जैमीसन ग्रीर ने शनिवार आधी रात से कुछ देर पहले पत्रकारों के साथ एक कॉल में पढ़े गए बयान में कहा, कनाडा ने इस सप्ताह की शुरुआत में तय शर्तों के तहत व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने से इनकार कर दिया। अमेरिका ने कनाडा को हमारे बाजार में किसी भी बड़े निर्यातक के मुकाबले सबसे बेहतर शर्तें देने की पेशकश की थी। इसके बावजूद कनाडा की नई मांगों और कुछ अन्य प्रतिबद्धताओं से पीछे हटने के कारण पिछले कुछ दिनों में बनाई गई संतुलित व्यवस्था बिगड़ गई।

व्यापार समझौते को लेकर वया बोले मार्क कार्नी

कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने जवाब दिया, अमेरिका की प्रस्तावित शर्तों में आखिरी समय में किए गए बदलाव अनुचित और

आर्थिक रूप से नुकसानदेह थे। उन्होंने किसी भी समझौते की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े कर दिए। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से लगाए जाने वाले आयात शुल्क से कनाडा से



अमेरिका भेजे जाने वाले कुल उत्पादों में से करीब पांच प्रतिशत प्रभावित होंगे। इनमें हॉकी स्टिक से लेकर जीभ की जांच में इस्तेमाल होने वाली लकड़ी की छोटी छड़ियां तक शामिल हैं। **तीन दिन की समय सीमा बढ़ी, फिर भी नहीं बनी बात:** हालांकि, इसका

राजनीतिक असर आर्थिक नुकसान से भी बड़ा होने की संभावना है। पिछले साल दोनों देशों के बीच करीब 880 अरब डॉलर मूल्य की वस्तुओं और सेवाओं का कारोबार हुआ था।



इन शुल्कों को शुरुआत में बुधवार रात 12 बजकर 1 मिनट से लागू किया जाना था। लेकिन ट्रंप ने बातचीत जारी रखने के लिए समय सीमा तीन दिन बढ़ा दी थी। इसके बावजूद दोनों देश तय समय तक किसी समझौते पर नहीं पहुंच सके।

दिन-रात काम फिर भी नहीं पल रहा परिवार, चीन के गिग वर्कर्स का सपना टूट रहा सरकार की नजरें टेढ़ी

यान जुआंग, एजेंसी। चीन में आर्थिक दबाव और कठिन कामकाजी हालात अब केवल आकड़ों या रोजगार के सवाल तक सीमित नहीं रह गए हैं। इनका असर वहां के श्रमिकों की लिखी कविताओं और किताबों में भी दिखाई देने लगा है। फूड डिलीवरी बॉय, कूरियर कर्मचारी और फैक्ट्री मजदूर अपनी रोजमर्रा की परेशानियों, कम आमदनी और परिवार से दूरी को साहित्य के जरिए सामने ला रहे हैं। यह श्रम साहित्य चीन के मध्य वर्ग और युवाओं के बीच भी जगह बना रहा है। इसकी वजह यह है कि बहुत से लोगों को इन रचनाओं में अपनी जिंदगी की झलक दिखाई देती है।

क्यों साहित्य में उतर रही है मजदूरों की मुश्किल जिंदगी

फूड डिलीवरी ड्राइवर रहे वांग जिबिंग की कविताएं चीन के श्रमिक जीवन की इसी तस्वीर को सामने रखती हैं। उनकी एक कविता में ऐसे डिलीवरी कर्मचारी की जिंदगी दिखाई गई है, जो दूसरे शहर में रहकर दिन-रात काम करता है। उसके लिए हर मिनट का मतलब एक और ऑर्डर पूरा करना है, लेकिन इतनी मेहनत के बाद भी पैसा कम मिलता है, जिसे वे कभी नहीं हो पातीं। घर से दूर रहने के कारण वह अपने बच्चे से भी दूर होता जाता है। यह कहानी अकेले एक व्यक्ति की नहीं मानी जा रही, बल्कि चीन में काम कर रहे कई प्रवासी मजदूरों और गिग वर्कर्स की स्थिति को दिखाती है। ऐसे श्रमिक साहित्य में आर्थिक दबाव, थकान, अपमान और बेहतर जीवन की अधूरी उम्मीद जैसे विषय लगातार सामने आ रहे हैं।

2026 के खानपान रझानों में क्षेत्रीय भारतीय व्यंजनों की शीर्ष पांच में जगह मिली है। अमेरिकी शहरों में भारतीय रेस्तराओं की खोज और बुकिंग में भी तेजी देखी गई है। अब ग्राहक केवल सामान्य भारतीय करी नहीं खोज रहे, बल्कि अलग-अलग इलाकों के खास स्वाद आजमाना चाहते हैं। केरल के नारियल, करी पत्ते, होंग और समुद्री भोजन जैसे स्वाद भी लोगों की पसंद में उभर रहे हैं। इससे भारतीय भोजन की पहचान क्षेत्रीय विविधता के साथ और व्यापक होती दिखाई देती है। पाकिस्तान में भारतीय खानपान की लोकप्रियता खासतौर पर लाहौर और कराची में दिखाई दे रही है। दिल्ली की चाट, अमृतसरी कुलचे, मुगलई व्यंजन और कोलकाता काठी रोल वहां लोगों को आकर्षित कर रहे हैं। लाहौर का गवालमंडी और कराची के फूड स्ट्रीट्स भारतीय स्वाद के लिए खास चर्चा में हैं। सोशल मीडिया ने भी इस रुचि को बढ़ाने में भूमिका निभाई है। यूट्यूबर और ब्लॉगर दिल्ली, अमृतसर, लखनऊ और दक्षिण भारत

मार्क जुकरबर्ग ने आयरलैंड में खरीदा सदियों 200 साल पुराना महल

वाशिंगटन , एजेंसी। मेटा के सीईओ मार्क जुकरबर्ग और उनके परिवार ने आयरलैंड में एक ऐतिहासिक प्रॉपर्टी खरीद ली है। अंतरराष्ट्रीय मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, उन्होंने काउंटी वॉटरफोर्ड स्थित करीब 200 साल पुराना स्ट्रैकली कैसल अपने नाम कर लिया है। यह तीन मंजिला महल गॉथिक रिवाइवल शैली में बना है और डबलिन से करीब 150 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इसे 1827 में एक अंग्रेज राजनेता के लिए तैयार किया गया था। पिछले करीब 20 वर्षों में इसके पूर्व मालिकों ने बड़े पैमाने पर मरम्मत और नवीनीकरण कराया है। यह सोदा ऑफ-मार्केट डील के जरिए एलेन-बकली परिवार से हुआ है। इसी वजह से महल की कीमत की आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। पूर्व मालिकों में माइकल एलेन-बकली भी शामिल हैं, जो

के व्यंजनों को अपने वीडियो के जरिए दर्शकों तक पहुंचा रहे हैं। भारतीय शहरों के नाम से जुड़े व्यंजन भी लोगों के बीच खास आकर्षण पैदा कर रहे हैं। इस तरह खानपान ने राजनीतिक सीमाओं से अलग अपनी जगह बनाई है। बांग्लादेश की राजधानी ढाका में भारतीय साड़ियों का आकर्षण खास तौर पर शادی-ब्याह के मौकों पर नजर आता है। बनारसी, कांजीवरम और चंदेरी साड़ियों को वहां केवल पारंपरिक पहनावे के तौर पर नहीं देखा जा रहा, बल्कि इन्हें शादियों में स्टेटस और खास पसंद से भी जोड़ा जा रहा है। मांग भी वहां बनी हुई है। गुलशन और धानमंडी जैसे इलाकों में कोलकाता काठी रोल और पाव भाजी लोगों के पसंदीदा स्वादों में शामिल हैं। यानी भारत से जुड़े भोजन और पहनावे दोनों ने ढाका में अपनी अलग पहचान बनाई है। यह सांस्कृतिक जुड़ाव इस बात का उदाहरण है कि लोगों की पसंद कई बार देशों के राजनीतिक संबंधों से अलग अपना रास्ता तय करती है।

मार्क जुकरबर्ग ने आयरलैंड में खरीदा सदियों 200 साल पुराना महल

वाशिंगटन , एजेंसी। मेटा के सीईओ मार्क जुकरबर्ग और उनके परिवार ने आयरलैंड में एक ऐतिहासिक प्रॉपर्टी खरीद ली है। अंतरराष्ट्रीय मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, उन्होंने काउंटी वॉटरफोर्ड स्थित करीब 200 साल पुराना स्ट्रैकली कैसल अपने नाम कर लिया है। यह तीन मंजिला महल गॉथिक रिवाइवल शैली में बना है और डबलिन से करीब 150 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इसे 1827 में एक अंग्रेज राजनेता के लिए तैयार किया गया था। पिछले करीब 20 वर्षों में इसके पूर्व मालिकों ने बड़े पैमाने पर मरम्मत और नवीनीकरण कराया है। यह सोदा ऑफ-मार्केट डील के जरिए एलेन-बकली परिवार से हुआ है। इसी वजह से महल की कीमत की आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। पूर्व मालिकों में माइकल एलेन-बकली भी शामिल हैं, जो



के प्रतिनिधि ने कहा कि मार्क और उनका परिवार इस ऐतिहासिक घर की देखभाल जारी रखने को लेकर खुश है। परिवार आयरलैंड में समय बिताने के लिए भी इस प्रॉपर्टी का इस्तेमाल करेगा। आयरलैंड में मेटा का बड़ा कारोबार है। कंपनी के यहां करीब 1,500 कर्मचारी काम करते हैं। डबलिन में इसका अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय है, कॉर्क में वचुअल और ऑगमेंटेड रियलिटी से जुड़ा बिजनेस चलता है तथा डबलिन के बाहर एक डेटा सेंटर भी है। अभी तक आधिकारिक पुष्टि का इंतजार है।

यान जुआंग, एजेंसी। चीन में आर्थिक दबाव और कठिन कामकाजी हालात अब केवल आकड़ों या रोजगार के सवाल तक सीमित नहीं रह गए हैं। इनका असर वहां के श्रमिकों की लिखी कविताओं और किताबों में भी दिखाई देने लगा है। फूड डिलीवरी बॉय, कूरियर कर्मचारी और फैक्ट्री मजदूर अपनी रोजमर्रा की परेशानियों, कम आमदनी और परिवार से दूरी को साहित्य के जरिए सामने ला रहे हैं। यह श्रम साहित्य चीन के मध्य वर्ग और युवाओं के बीच भी जगह बना रहा है। इसकी वजह यह है कि बहुत से लोगों को इन रचनाओं में अपनी जिंदगी की झलक दिखाई देती है।

क्यों साहित्य में उतर रही है मजदूरों की मुश्किल जिंदगी

फूड डिलीवरी ड्राइवर रहे वांग जिबिंग की कविताएं चीन के श्रमिक जीवन की इसी तस्वीर को सामने रखती हैं। उनकी एक कविता में ऐसे डिलीवरी कर्मचारी की जिंदगी दिखाई गई है, जो दूसरे शहर में रहकर दिन-रात काम करता है। उसके लिए हर मिनट का मतलब एक और ऑर्डर पूरा करना है, लेकिन इतनी मेहनत के बाद भी पैसा कम मिलता है, जिसे वे कभी नहीं हो पातीं। घर से दूर रहने के कारण वह अपने बच्चे से भी दूर होता जाता है। यह कहानी अकेले एक व्यक्ति की नहीं मानी जा रही, बल्कि चीन में काम कर रहे कई प्रवासी मजदूरों और गिग वर्कर्स की स्थिति को दिखाती है। ऐसे श्रमिक साहित्य में आर्थिक दबाव, थकान, अपमान और बेहतर जीवन की अधूरी उम्मीद जैसे विषय लगातार सामने आ रहे हैं।

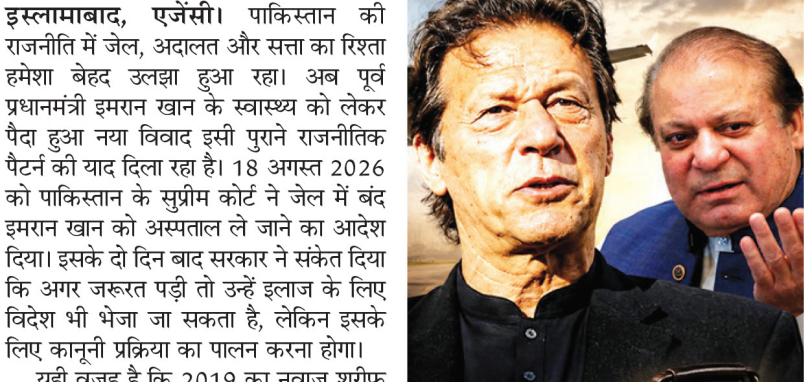


चीन में कई मजदूर, डिलीवरी कर्मचारी और फैक्ट्री वर्कर अपनी वास्तविक जिंदगी को कहानियों और कविताओं में बदल रहे हैं। युवाओं में बेरोजगारी की ऊंची दर और बेहतर जीवन की उम्मीदों के कमजोर पड़ने से इस साहित्य की मांग बढ़ रही है। इन रचनाओं में वे कठिनाइयां सामने आती हैं, जिन्हें सरकार नियंत्रण वाले मीडिया में बहुत कम जगह मिलती है। श्रमिक साहित्य के बढ़ते प्रभाव से चीन के अधिकारी भी इसके प्रति सतर्क बताए जा रहे हैं। इसकी खास वजह यह है कि ये रचनाएं किसी राजनीतिक भाषण की तरह नहीं, बल्कि सीधे उस व्यक्ति की जिंदगी से निकलती हैं जो रोज काम करता है, कमाता है और अपने परिवार को चलाने की कोशिश करता है।

प्रवासी श्रमिक हू अनयान ने कूरियर कर्मचारी समेत 19 अलग-अलग तरह के काम किए हैं। उन्होंने लॉजिस्टिक्स कंपनी में छंटनी करने वाले कर्मचारी, सुखाड़ा गाई और सुखिथा

स्टोर कर्मचारी जैसे काम भी किए। इन नौकरियों के दौरान आए अनुभवों और संघर्षों को उन्होंने इंटरनेट पर निबंधों के रूप में लिखा। बाद में 2023 में इन्हीं अनुभवों पर आधारित किताब प्रकाशित हुई। किताब को लोकप्रियता मिली और उसका अंग्रेजी में अनुवाद भी हुआ। यह उदाहरण बताता है कि श्रमिकों की जिंदगी पर लिखी रचनाएं केवल साहित्यिक वर्ग तक सीमित नहीं हैं। आम पाठक भी इनमें अपनी या अपने आपस के लोगों की जिंदगी पहचान रहा है। यही वजह है कि श्रम साहित्य चीन में एक बड़े सामाजिक अनुभव को आवाज देने वाला माध्यम बनता जा रहा है।

वांग जिबिंग की कविताओं को अब साहित्यिक दुनिया में भी गंभीरता से देखा जा रहा है। उनके कविता संग्रह ‘लो फ्लाइट’ को पिछले महीने प्रतिष्ठित लू शुन साहित्यिक पुरस्कार मिला। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में प्रोफेसर झू गिंग के अनुसार, चीनी लोगों की इस साहित्य में रुचि इसलिए बढ़ रही है क्योंकि उन्हें इसमें अपनी जिंदगी की सच्चाई दिखाई देती है। यही इस पूरे बदलाव का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। मजदूर अब केवल उत्पादन या डिलीवरी व्यवस्था का हिस्सा नहीं रह गए हैं, बल्कि अपनी कहानी खुद लिख रहे हैं। उनकी कविताएं और किताबें चीन में आर्थिक दबाव, काम की असुरक्षा और बेहतर जीवन की कमजोर होती उम्मीदों को जगाने ला रही हैं। सवाल यह है कि जैसे-जैसे यह साहित्य और लोकप्रिय होगा, क्या चीन में श्रमिकों की वास्तविक स्थिति पर बहस भी उतनी ही तेजी से बढ़ेगी



का कम और पाकिस्तान की उस राजनीतिक परंपरा का ज्यादा है। इसमें जेल में बंद बड़े नेताओं को स्वास्थ्य के आधार पर राहत मिलने के बाद सियासी समीकरण बदलते रहे हैं। चलिए पहले इतिहास में चलते हैं और जानते हैं कि नवाज शरीफ के साथ क्या हुआ था। स्वास्थ्य को लेकर गंभीर सवाल उठे। दोनों

मामलों में मेडिकल जांच और अदालत की भूमिका सामने आई। दोनों मामलों में विदेश में इलाज की संभावना भी चर्चा में आई। लेकिन दोनों की कानूनी स्थिति बिल्कुल समान नहीं है। नवाज शरीफ को 2019 में विदेश जाने की अनुमति एक तय प्रक्रिया के तहत मिली थी, जबकि इमरान खान के मामले में अभी सरकार ने केवल जरूरत पड़ने पर विदेश इलाज की संभावना जताई है। दूसरी बड़ी बात यह है कि इमरान के खिलाफ इस समय भी कई कानूनी मामले और अपीलें चल रही हैं। एक मामले में वह 14 साल की सजा काट रहे हैं, जबकि कई अन्य मामलों में सजा निलंबित या फैसले पल्टे जा चुके हैं। ऐसे में विदेश जाना केवल स्वास्थ्य का मामला नहीं होगा। यह कानूनी अनुमति और उनकी हिरासत की स्थिति से भी जुड़ा होगा। यही कारण है कि इमरान खान के समर्थक इसे राहत की शुरुआत के रूप में देख सकते हैं, लेकिन अभी इसे जेल से स्थायी बाहर निकलने का संकेत मानना ठीक नहीं होगा।

2019 में नवाज शरीफ के साथ क्या हुआ था

नवाज शरीफ उस समय भ्रष्टाचार के एक मामले में जेल की सजा काट रहे थे। उनकी तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया और मेडिकल आधार पर राहत का रास्ता खुला। फरवरी 2019 में इस्लामाबाद हाईकोर्ट ने मेडिकल आधार पर उनकी जमानत याचिका खारिज की थी, लेकिन बाद के महीनों में उनकी स्वास्थ्य स्थिति को लेकर मामला फिर गंभीर हुआ। आठवून-नवंबर 2019 में उन्हें मेडिकल आधार पर जमानत मिली और इलाज के लिए विदेश जाने का रास्ता तैयार हुआ। नवंबर 2019 में पाकिस्तान सरकार ने नवाज शरीफ को इलाज के लिए चार सप्ताह के लिए विदेश जाने की एक बार की अनुमति दी थी। सरकार ने इसके लिए एक क्षतिपूर्ति बांड की शर्त भी रखी थी। बाद में लाहौर हाईकोर्ट के आदेश के बाद विदेश

जाने की प्रक्रिया आगे बढ़ी और नवाज शरीफ लंदन चले गए। उनके साथ उस समय उनके भाई शहबाज शरीफ भी थे। यानी 2019 का घटनाक्रम सीधे तौर पर जेल से शुरू होकर मेडिकल जांच, अदालत की राहत और फिर विदेश में इलाज तक पहुंचा था। आज इमरान खान के मामले में भी जेल से अस्पताल और फिर संभावित विदेश इलाज की बात सामने आई है। यही समानता दोनों मामलों को एक साथ देखने की वजह बन रही है।

क्या सरकार सच में इमरान को विदेश भेज सकेगी? यही इस पूरे मामले का सबसे अहम सवाल है। 20 अगस्त को पाकिस्तान सरकार ने संकेत दिया कि अगर इमरान खान के इलाज के लिए जरूरत पड़ी तो उन्हें विदेश भेजने की संभावना पर विचार किया जा सकता है। हालांकि सरकार ने साफ

किया कि इसके लिए कानूनी प्रक्रिया का पालन करना होगा। यानी अभी ऐसा कोई फैसला नहीं हुआ है कि इमरान खान को लंदन या किसी दूसरे देश भेजा जा रहा है। सरकार की बात इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि जेल में बंद किसी बड़े राजनीतिक नेता को विदेश इलाज के लिए भेजना केवल मेडिकल फैसला नहीं रहता। इसमें अदालत, जेल प्रशासन, सरकार और सुरक्षा एजेंसियों की भूमिका भी जुड़ जाती है। नवाज शरीफ के मामले में भी विदेश जाने के लिए अदालत और सरकार के स्तर पर कई कानूनी कदम उठें थे। उनके लिए पहले मेडिकल आधार पर राहत मिली और फिर विदेश जाने की अनुमति की प्रक्रिया पूरी हुई थी। इसलिए इमरान के मामले में अभी सबसे सही बात यही है कि विदेश इलाज का विकल्प खुला बताया गया है।

ब्रीफ न्यूज़

मैच के दौरान पुर्तगाली फुटबॉलर क्यूविन कास्त्रो की मौत

मुंबई। पुर्तगाल के 25 साल के फुटबॉलर क्यूविन कास्त्रो की मैच के दौरान मैदान पर गिरने के बाद मौत हो गई। वह शनिवार को लिस्बन में प्री-सीजन फ्रेंडली मैच खेल रहे थे। इस घटना के बाद मैच स्थगित कर दिया गया। लिस्बन फुटबॉल एसोसिएशन ने उनके निधन की पुष्टि की। कास्त्रो पुर्तगाल में चौथे डिबीजन की लीग में खेलने वाली टीम रियल स्पोर्ट क्लब का हिस्सा थे। मुकाबला एस्ट्रेला डि अमादोरा नाम की टीम से हो रहा था। 22वें मिनट में मैदान पर गिरे, अस्पताल ले जाया गया कास्त्रो मैच के 22वें मिनट में मैदान पर गिर पड़े। उनके गिरने के बाद मेडिकल टीम ने तुरंत इलाज शुरू किया। उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी मौत की पुष्टि हुई। कुछ रिपोर्ट्स के मुताबिक, मैदान पर उन्हें बिजली का झटका देकर होश में लाने की कोशिश भी की गई।

वैभव सूर्यवंशी दलीप ट्रॉफी डेब्यू में 8 रन पर आउट:

नई दिल्ली। 15 साल के वैभव सूर्यवंशी दलीप ट्रॉफी डेब्यू में ईस्ट जोन की ओर से खेलते हुए 6 गेंदों में 8 रन बनाकर आउट हो गए। उन्होंने लगातार दो गेंदों पर दो चौके लगाए, लेकिन इसके बाद बड़ा शॉट खेलने की कोशिश में स्लिप में कैच दे बैठे। वैभव अपनी टीम के उपकप्तान हैं। नॉर्थ ईस्ट जोन के बिश्नोरजीत कौथोजम ने उन्हें आउट किया। हालांकि, वैभव के जल्दी आउट होने के बावजूद ईस्ट जोन ने दिन का खेल 6 विकेट पर 355 रन बनाकर खत्म किया। सुदीप कुमार घरामी ने 146 और शाहबाज अहमद ने नाबाद 100 रन बनाए।

सिंड़ेला का डबल धमाका, पायस जैन ने जीता पुरुष एकल खिताब

कानपुर। यूटीटी नेशनल रैंकिंग टेबल टेनिस चैंपियनशिप में पश्चिम बंगाल की सिंड़ेला दास ने दोहरा खिताब जीतकर अपना दबदबा कायम किया। उन्होंने महिला एकल के साथ अंडर-19 बालिका एकल का खिताब भी अपने नाम किया। पुरुष एकल में दिल्ली के पायस जैन ने पीएसपीबी के मानव ठक्कर को 4-1 से हराकर खिताब जीता। स्पोर्ट्स हब में हुए महिला एकल फाइनल में सिंड़ेला ने महाराष्ट्र की दिव्याशी बोमविक को 9-11, 11-8, 11-8, 5-11, 11-7, 11-9 से हराया। दिव्याशी ने पहला गेम जीतकर बढ़त बनाई, लेकिन सिंड़ेला ने लगातार दो गेम जीतकर वापसी की। चौथे गेम में दिव्याशी ने 11-5 से स्कोर 2-2 किया। इसके बाद सिंड़ेला ने दबाव संभालते हुए अगले दोनों गेम जीतकर खिताब अपने नाम किया। सेमीफाइनल में सिंड़ेला ने पीएसपीबी की स्वस्तिका घोष को 4-3 से हराया। निर्णायक गेम में 4-7 से पिछड़ने के बाद उन्होंने शानदार वापसी करते हुए 11-9 से जीत दर्ज की। दूसरी ओर, दिव्याशी ने पीएसपीबी की यशस्विनी घोरपड़े को 4-1 से हराकर फाइनल में जगह बनाई। पायस ने मानव को चुनौती तोड़ी। पुरुष एकल फाइनल में तीसरी वरीयता प्राप्त पायस जैन और दूसरी वरीयता वाले मानव ठक्कर के बीच कड़ा मुकाबला हुआ। पायस ने पहला गेम 11-3 से जीता, लेकिन मानव ने दूसरे गेम में वापसी की। इसके बाद पायस ने बेहतर नियंत्रण दिखाते हुए अगले तीनों गेम जीतकर 11-3, 9-11, 11-5, 12-10, 11-8 से मुकाबला अपने नाम किया।पायस ने सेमीफाइनल में आरएसपीबी के जीत चंद्रा को 4-1, जबकि मानव ने हरियाणा के अंकुर भट्टाचार्य को 4-1 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया था।

मेसी पर विरोधी खिलाड़ी की गर्दन पर हाथ मारने के लिए जुर्माना लगा

मियामी। मेजर लीग सॉकर (एलएलएस) ने अर्जेंटीना के स्टार फुटबॉलर लियोनेल मेसी पर मैदान हुए एक झड़प को लेकर भारी जुर्माना लगाया है। मेसी की यहां हुए मैच मैच के दौरान फिलाडेल्फिया यूनियन के मिडफील्डर क्विन सुलिवन से झड़प हो गयी थी। ये मामला इंटर मियामी और फिलाडेल्फिया यूनियन के बीच 2-2 से बराबरी पर रहे मैच का है। इस मामले में मेसी को दोषी पाया गया है पर उनपर किसी प्रकार क प्रतिबंध नहीं लगाया गया है। इससे वह अगले मुकाबले में भी खेल सकेंगे। फिलाडेल्फिया यूनियन के खिलाफ दूसरे हाफ के स्टंपिंग टाइट्ट में मेसी और सुलिवन के बीच पहले बहस हुई। इसके बाद मेसी पर सुलिवन की गर्दन के पीछे हाथ मारने का आरोप लगा हालांकि मैच के दौरान रेफरी ने दोनों में से किसी भी खिलाड़ी को कोई कार्ड नहीं दिखाया था पर एमएलएस ने बाद में घटना की वीडियो फुटेज देखने के बाद मेसी को अनुशासनात्मक नीति का उल्लंघन करे पाया। इसमें विरोधी खिलाड़ी के चेहरे, सिर या गर्दन पर हाथ मारना शामिल है। इसी के आधार पर मेसी पर जुर्माना लगाया गया। हालांकि, जुर्माने की राशि की जानकारी नहीं मिली है पर अहम बात ये है कि निलंबन न होने के कारण मेसी आगामी मैचों में इंटर मियामी से खेल सकेंगे। यह मैच मेसी के लिए व्यक्तिगत रूप से भी बेहद भावुक क्षण लेकर आया, क्योंकि उन्होंने अपने पिता जॉर्ज मेसी के निधन के बाद यह अपना पहला मुकाबला खेला था। इस भावनात्मक चुनौती के बावजूद, मेसी ने 26वें मिनट में बाएं पैर से शानदार गोल करके इंटर मियामी को बढ़ा दिलाई और एक अन्य गोल में सहायता की थी।



डोरमंट जर्मनी में डीएफएल सुपर कप फुटबॉल में जीत के बाद ट्रॉफी उठाये हुए बेयर्न म्यूनिख के लुइस डीयाज और साथी खिलाड़ी।

देश-विदेश

ऋषभ पंत चोटिल होकर पवेलियन लौटे, गिल की फिफटी

श्रीलंका के खिलाफ पडिक्कल का लगातार दूसरा टेस्ट शतक:भारत का स्कोर 300/5

कोलंबो। भारत और श्रीलंका के बीच जारी कोलंबो टेस्ट के पहले दिन का खेल समाप्त हो गया। मेहमान टीम ने 85 ओवर में पांच विकेट पर 300 रन बनाए। पहले दिन का खेल समाप्तदेवदत्त पडिक्कल के लगातार दूसरे टेस्ट शतक की बदौलत भारत ने श्रीलंका के खिलाफ दूसरे टेस्ट के पहले दिन का खेल खत्म होने तक 85 ओवर में 5 विकेट पर 300 रन बना लिए। पडिक्कल ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 193 रेंदों पर 117 रन बनाए, जिसमें 12 चौके शामिल रहे। भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने भी अर्धशतक जमाया। उन्होंने 108 गेंदों पर 50 रन की पारी खेली, जिसमें छह चौके शामिल थे। गिल और पडिक्कल के बीच तीसरे विकेट के लिए 120 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी हुई। पडिक्कल का लगातार दूसरा शतक पडिक्कल ने धैर्य और संयम के साथ बल्लेबाजी करते हुए अपने टेस्ट करियर का शानदार शतक पूरा किया। यह उनका लगातार दूसरा टेस्ट शतक है। उनकी 117 रन की पारी ने भारत को मजबूत स्थिति में पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई।

गिल ने भी जड़ा अर्धशतक

कप्तान शुभमन गिल ने भी अच्छी पारी खेली और 50 रन बनाए। हालांकि अर्धशतक पूरा करने के तुरंत बाद वह आउट हो गए। उन्हें श्रीलंका के तेज गेंदबाज असिथा फर्नांडो ने विकेट के पीछे कैच कराया। गिल के आउट होने के समय भारत का स्कोर 187 रन था। भारत को चौथा झटका भारत को 281 के स्कोर पर चौथा झटका लगा। केशारा नुवांथा ने देवदत्त पडिक्कल को बोलड किया। वह 193 गेंद में 12 चौके की मदद से 117 रन बनाए।

भुवनेश्वर में भोपाल की पूजा ने जीता गोल्ड 1500 मीटर रेस 4 मिनट 17 सेकंड में पूरी की



भोपाल। साई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (सीआरसी) भोपाल की एथलीट पूजा ओला ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शानदार प्रदर्शन करते हुए भुवनेश्वर में आयोजित वर्ल्ड एथलेटिक्स कॉन्टिनेंटल टूर इंडिया इवेंट में स्वर्ण पदक जीता है। 22 अगस्त को हुई 1500 मीटर दौड़ में पूजा ने 4 मिनट 17 सेकंड का समय निकालकर पहला स्थान हासिल किया। पूजा ने शुरुआत से ही रेस में अपनी लय बनाए रखी। अंतिम चरण में उन्होंने रफ्तार बरकरार रखते हुए प्रतिद्वंद्वियों को पीछे छोड़ा और स्वर्ण पदक अपने नाम किया। उनकी इस सफलता में साई सीआरसी भोपाल में चल रहे नियमित प्रशिक्षण, अनुशासन और प्रतियोगिताओं के अनुभव की अहम भूमिका रही। आरडी ने कहा- मेहनत और अनुशासन का नतीजा साई सीआरसी भोपाल के क्षेत्रीय निदेशक अभिषेक सिंह चौहान ने पूजा को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि केंद्र और



कोलंबो में भारत के मिले-जुले प्रदर्शन वाले दिन में पडिक्कल के शतक ने सुर्खियां बटोरीं।
26 वर्षीय खिलाड़ी ने गाले में बनाए गए 167 रनों के बाद एक और शतक लगाकर भारत के लिए चेतेश्वर पुजारा के बाद लगातार दो विदेशी टेस्ट मैचों में शतक बनाने वाले पहले भारतीय नंबर 3 बल्लेबाज बन गए। पहले दिन का खेल समाप्त होने पर भारत का स्कोर 300 रन पर 5 विकेट था।

ऑस्ट्रेलिया ने बांग्लादेश को दूसरा टेस्ट दो दिन में हराया

मैकॉय में पारी और 51 रन से जीता, स्टार्क ने 10 विकेट लिए
ऑस्ट्रेलिया ने मैकॉय में खेले गए दूसरे टेस्ट में बांग्लादेश को पारी और 51 रन से हरा दिया। इसके साथ ही दो टेस्ट की सीरीज 1-1 से बराबर हो गई। डार्विन में पहला टेस्ट 9 विकेट से हारने के बाद ऑस्ट्रेलिया ने दूसरे मुकाबले में शानदार वापसी की। यह टेस्ट दो दिन में ही खत्म हो गया। ऑस्ट्रेलिया की जीत के हीरो मिचेल स्टार्क रहे। उन्होंने मैच में 10 विकेट लिए। स्टार्क ने पहली पारी में 6 और दूसरी पारी में 4 विकेट लिए। यह उनके टेस्ट करियर का चौथा 10 विकेट हॉल है। स्टार्क को प्लेयर ऑफ द मैच और सीरीज चुना गया। बांग्लादेश पहली पारी में सिर्फ 64 रन पर ऑलआउट हो गया था। जबाब में ऑस्ट्रेलिया ने 210 रन बनाए। उसे 146 रन



की बढ़त मिली। दूसरी पारी में भी बांग्लादेश की टीम 95 रन पर सिमट गई। स्टार्क ने दूसरी पारी में भी 4 विकेट लिए 146 रन की बढ़त के बाद बांग्लादेश के

सामने मैच बचाने की चुनौती थी। लेकिन स्टार्क ने नई गेंद से एक बार फिर लगातार विकेट लिए। उन्होंने शादमान इस्लाम और मोमिनुल हक को लगातार गेंदों पर आउट किया। इसके बाद पैट कर्मिस ने तंजीद हसन को आउट किया। कप्तान नजमुल हुसैन शांतो ने 31 रन बनाए। उन्होंने कुछ अच्छे शॉट लगाकर ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों का सामना किया। लेकिन नाथन लायन ने उन्हें आउट कर दिया। इसके बाद बांग्लादेश की पारी ज्यादा देर नहीं टिक सकी। स्टार्क ने लिटन दास और तैजुल इस्लाम के विकेट लेकर अपना 10 विकेट का आंकड़ा पूरा किया। पैट कर्मिस और नाथन लायन ने भी 3-3 विकेट लिए।

थोड़ी देर बाद डूरंड कप का रोमांच, फाइनल में भिड़ेंगे चिर प्रतिद्वंद्वी ईस्ट बंगाल और मोहन बागान

मुंबई। ईस्ट बंगाल और मोहन बागान के बीच महामुकाबला, 13वीं बार खिताबी जंग 22 साल का सूखा खत्म करने उतरेगा ईस्ट बंगाल, 18वें खिताब पर मोहन बागान की नजर डूरंड कप का रोमांच अब से थोड़ी देर बाद अपने चरम पर होगा, जब भारतीय फुटबॉल के दो चिर प्रतिद्वंद्वी ईस्ट बंगाल और मोहन बागान सुपर जायंट खिताब के लिए आमने-सामने होंगे। यह मुकाबला सिर्फ एक ट्रॉफी की लड़ाई नहीं, बल्कि कोलकाता की फुटबॉल विरासत, प्रतिष्ठा और 100 साल

से अधिक पुरानी प्रतिद्वंद्विता का नया अध्याय होगा। दोनों टीमों डूरंड कप के फाइनल में 13वीं बार भिड़ेंगे। ईस्ट बंगाल के लिए यह फाइनल खास तौर पर भावनात्मक है। टीम ने आखिरी बार 2004 में डूरंड कप जीता था। इसके बाद 22 साल से ट्रॉफी उसकी पहुंच से दूर है। 2004 के फाइनल में ईस्ट बंगाल ने मोहन बागान को 2-1 से हराकर खिताब जीता था। अब वही प्रतिद्वंद्वी सामने



है और ईस्ट बंगाल के पास लंबे इंतजार को खत्म करने का मौका।

टॉप सीड चीनी जोड़ी को हराया; विमेंस डबल्स में त्रिसा-गायत्री को ब्रॉन्ज मिला

गिकेल-डेलफिन गोल्ड जीतने वाली पहली फ्रांसीसी जोड़ी

नई दिल्ली। फ्रांस के थॉम गिकेल और डेलफिन डेलरू बैडमिंटन वर्ल्ड चैंपियनशिप के मिक्स्ट डबल्स का खिताब जीत लिया है। गिकेल-डेलफिन की जोड़ी इस चैंपियनशिप का गोल्ड जीतने वाली फ्रांस की पहली जोड़ी है।

इस 5वीं सीड जोड़ी ने रविवार को नई दिल्ली के इंदिरा गांधी स्टेडियम में खेले गए फाइनल में टॉप सीड फेंग यान झे और हुआंग डोंग पिंग की जोड़ी को 22-20, 20-21, 21-15 से हराया। यह मैच एक घंटे 18 मिनट तक चला।

डेलरू बोले- बेहद गर्व महसूस कर रहे हैं

बीडब्ल्यूएफ की वेबसाइट के मुताबिक, डेलरू ने कहा,



‘बहुत भावनाएं हैं। फ्रांस के लिए पहला गोल्ड जीतकर हम बहुत खुश और बेहद गर्व महसूस कर रहे हैं।’ उन्होंने कहा- ‘यह शानदार मैच था। दोनों जोड़ियों ने बहुत अच्छा खेलना और हमें जीत के लिए काफी कोशिश करनी पड़ी। पहली बार पोंडियम पर राष्ट्रगान सुनना शानदार है।’

साउथ कोरिया ने चीनी जोड़ी को हराया विमेंस डबल्स में साउथ कोरिया की बेक हा ना और ली सो ही ने चीन की टॉप सीड लियू शेंग शु और टैन निंग को 21-15, 21-15 से हराया। चीन की जोड़ी ने सेमीफाइनल मुकाबले में भारत की त्रिसा जॉली और गायत्री गोपीचंद की जोड़ी को हराया



था। लानियर मेंस सिंगल्स फाइनल में पहुंचने वाले पहले फ्रांसीसी फ्रांस के एलेक्स लानियर ने मेंस सिंगल्स ने इतिहास रचा है। वे वर्ल्ड चैंपियनशिप के मेंस सिंगल्स फाइनल में पहुंचने वाले पहले फ्रांसीसी खिलाड़ी बने हैं। सेमीफाइनल में उन्होंने कनाडा के विक्टर लार्ड को 16-21,

21-13, 21-14 से हराया था। फाइनल में उनका सामना जापान के कोडाई नाराओका से होगा। मिक्स्ट डबल्स में थॉम गिकेल और डेलफिन डेलरू की जोड़ी भी फाइनल में पहुंची है। यह वर्ल्ड चैंपियनशिप के इतिहास में फ्रांस की पहली मिक्स्ट डबल्स फाइनलिस्ट जोड़ी है।

